अध्याय-द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनर्निरीक्षण

अध्याय - 2

2.0 सम्बन्धित साहित्य का पुनर्निरीक्षण -

" व्यवहारिक दृष्टि से सारा मानव - ज्ञान पुस्तकों एव पुस्तकालयो मे प्राप्त किया जा सकता है । अन्य जीवो के अतिरिक्त जो प्रत्येक पीढी मे नये सिरे से प्रारभ करते है, गानव समाज अपने प्राचीन अनुभवो को सग्रहित एव सुरक्षित रखता है । ज्ञान के अथाह भण्डार मे मानव का निरन्तर योग सभी क्षेत्रों मे उसके विकास का आधार है ।" (बेस्ट 1959)

इस अध्याय मे व्यक्तित्व एव शिक्षण से सबंधित पूर्व शोध कार्यों का पुनरावलोकन किया गया है । जिन्हे दो खण्डो मे प्रस्तुत किया गया है -

2 1 (अ) विदेशों मे किये गये शोध

2 2 (ब) भारत में किये गये शोध

2.1 विदेशो में किये गये शोध -

गेटजेल एवं जैक्सन (1963) ने अपने अध्ययन मे पाया कि बुद्वि एव सम्वध बनाने की योग्यता प्रभावी शिक्षक के कारक है ।

बर्किनसा (1965) ने पाया कि बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले अधिक सफल शिक्षक होते है ।

सोलोमन (1965) ने प्रशिक्षण पाठ्यक्रम मे सफलता एव बहिर्मुखी गुणों मे सबध पाया ।

टालर (1962) ने अपने अध्ययन मे पाया कि प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक बहुत ही हसमुख, दयालु, क्षमाशील, सहानुभूति पूर्ण तथा विनोद के प्रति विवेक बुद्विपूर्ण थे ।

लैम्के (1951) ने कैटल के 16 पी एफ टेस्ट के द्वारा पाया कि एक अच्छा शिक्षक अधिक वाचाल, हसमुख, सन्तुष्ट, खुले विचार का एव औसत से तेज होता है । शिक्षण की कार्य क्षमता व अन्तर्मुखी मे परस्पर विरोधी परिणाम है ।

बॉबटन एट एल (1961) का विचार है कि एक अच्छा शिक्षक अन्तर्मुखी व्यक्तित्व का होता है ।

स्मिड (1950) ने पाया कि अन्तर्गमन कम शिक्षण क्षमता से सम्बन्धित है । किन्तु सिगनर (1954) ने इसी एम एम पी आई टेस्ट से सामाजिक अन्तर्मुखी एव शिक्षण प्रभावशीलता मे धनात्मक सह-सम्बध पाया ।

ऐडवल (1952) ने बुद्विमान, भावुक रूप से स्थिर अन्त परायण, साहसी, विलक्षण, चिन्तामुक्त शिक्षकों का अधिक सफल होना पाया है । इसी प्रकार बर्किन सॉ (1965) ने पाया कि भावुक स्थिरता सफल शिक्षक के लिए महत्वपूर्ण है ।

सैमेनटरी (1970) ने अपने अध्ययन मे पाया कि शिक्षक के विचार एव शिक्षण प्रभावशीलता मे बहुत घनिष्ट सम्बध है । उन्होने पाया कि शिक्षक के समन्वय एव शिक्षण प्रभावशीलता मे धनात्मक सम्बध है ।

शिक्षाविद जॉनसन (1968) ने इलियानाइस विश्विद्यालय मे एक शोध अध्ययन सचालित किया जिसमे छात्रो को निम्नलिखित कौशलों मे शिक्षण दिया गया है -

1) व्याख्यान
2) मार्गदर्शन
3) विचार विमर्श।

पर्यवेक्षण के तीन उपागम इस प्रकार थे -

1) आगमन विधि
2) निर्देशन
3) विषयोन्मुख

इस अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्ष। थे -

1) सिर्फ। कौशल जैसे कि निर्देशन देना से क्रमबद्व वृद्वि प्रकट हुई ।
2) यह पाया गया कि विभिन्न प्रकार के पर्यवेक्षणीय व्यवहार से कौशल उपलब्धि के विभिन्न परिणाम प्राप्त होते है । कुछ शोधकर्ताओ ने कक्षागत सूक्ष्म अध्यापन प्रणाली के परवर्ती प्रभावो और उपलब्धियो के मापन का प्रयास किया, जिसकी कुछ सन्दर्भ। मापक पद्वति प्रविधि वी छात्रों और अध्यापकों, पर्यवेक्षकों तथा प्रशिक्षणार्थियों से पूर्ति। कराई गई ।

भारत मे किये गये शोध -

कुलन्देवल और राव (1968) ने आदर्श शिक्षको और छात्रो की विशेषताओं की सूची तैयार की है ।

पन्ड्या (1972) ने एक प्रतिभाशाली शिक्षक बनने के लिये आवश्यक लक्षणों की एक सूची तैयार की है । इसी प्रकार राजगोपालन ने कमजोर स्कूली शिक्षकों की विशेषताओ को मालूम किया है और इनका सबध कुछ पर्यावरण के कारकों जैसे लिग आयु से सबधित किया है ।

दैवा (1966) ने सफल छात्र शिक्षकों मे व्यक्तित्व को सबसे महत्वपूर्ण एव बुद्वि को सबसे कम महत्वपूर्ण प्रतिमान मानता है ।

कौल (1972) ने अपने शोध मे प्रसिद्व एव गैर प्रसिद्व शिक्षकों के व्यक्तित्व चरों का अध्ययन किया है । अध्ययन मे पाया कि प्रसिद्व शिक्षक अधिक बुद्विमान भावात्मक रूप से परिपक्व, शात, कठोर एव जोखिम उठाने वाले होते है । वे सामाजिक, सैद्वांतिक, राजनैतिक और धार्मिक मूल्यों मे ऊचे होते है । परन्तु आर्थिक व सौन्दर्य मूल्यो मे सार्थक रूप से निम्न होते है । उनमे शिक्षण के प्रति और अन्य कार्यो के प्रति 'अनुकूल' दृष्टिकोण पाया गया है ।

ग्रेवाल (1976) ने बुद्विजीवी, व्यक्तित्व कारको और प्रभावी शिक्षण के मध्य अध्ययन किया है । अध्ययन मे पाया कि प्रभावी शिक्षण के लिये प्रमुख प्रतिमान है - घर - स्वास्थ्य, सामाजिक सवेगात्मक पूर्ण व्यवस्थापन, मौखिक व अमौखिक बुद्वि, प्रतिमानो और प्रभावी शिक्षण कारकों मे सार्थक सबध है ।

सिह (1976) ने व्यक्तित्व चरों और प्रभावकारी शिक्षण के बीच अध्ययन किया । उन्होने 30 छात्र अध्यापको को 10 उच्च स्तर, 10 निम्न स्तर और 10 औसत छात्र शिक्षक को अपने अध्ययन मे शामिल किया है । तीनों समूहो मे आपस मे सार्थक अन्तर पाया गया है । निम्न स्तर के छात्र अध्यापकों मे शिक्षण के और समस्या के समाधान मे आत्मविश्वास मे कमी थी । जबकि औसत छात्र अध्यापको का शिक्षण मे आत्म विश्वास था परन्तु उसमे व्यवस्थापन की कमी थी उच्चस्तरीय शिक्षक पारिवारिक समस्याओं मे भाग नहीं लेते है, फिर लेने पर उन्हे शीघ्र सुलझा लेते है, उच्च स्तरीय छात्र अध्यापक बोलचाल मे साहित्यिक भाषा का प्रयोग अन्य दोनो समूहों की तुलना मे ज्यादा करते है ।

छाया (1974) ने प्रभावी एव अप्रभावी स्कूल अध्यापको की विशेषताओ का अध्ययन व्यक्तित्व का समन्वय शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण, शिक्षण मे रूचि, भावनाओ की स्थिरता, बहिर्मुखता, अतर्मुखता एव प्राधिकारवाद के सदर्भ मे किया ।

गुप्ता (1977) ने सफल एव अल्प सफल शिक्षको के व्यक्तित्व के गुण समन्वय का स्थिर शैक्षिको उपलब्धियो एव व्यवसायिक दृष्टिकोण का अध्ययन किया। उन्होने पाया कि शिक्षण मे सफलता 16 पी एफ के ए, बी, सी, एफ, जी, एच, आई, एल, एम, एन ,ओ क्यू 3 एवं क्यू 4 आदि शीलगुण उल्लेखनीय रूप से सबंधित थे । इनका शैक्षणिक उपलब्धियो के साथ कोई विशेष सबध नहीं था । सफल एव अल्प सफल शिक्षको मे व्यक्तित्व के गुण, समन्वय, व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण यह तीन कारक शिक्षण मे सफलता के कारण माने गये है ।

इस सबध मे कुछ और अध्ययन भी हुए है -

1 श्रीवास्तव 1953

2 जैन 1954

3 घोष 1956

4 मुखर्जी कलकत्ता 1968

5 धामी पजाब 1974

6 गोस्वामी आगरा 1978

7 शाह सौराष्ट्र 1978

8 गाधी बी एव यू 1982

इन शोधकर्ताओ ने यह निष्कर्ष निकाला है कि प्रभावी शिक्षको मे बेहतर व्यक्तित्व समन्वय शिक्षण के पक्ष मे दृष्टिकोण एव प्रभावी भावुक स्थिरता पाई जाती है किन्तु उन्होंने अप्रभावी शिक्षको के मुकाबले शिक्षण के प्रति कोई विशेष रूचि नहीं व्यक्त की । प्रभावी शिक्षक अधिक अतर्गामी भी होते है । अप्रभावी शिक्षकों मे उनके प्रभावी साथियो के मुकाबले स्वामित्व की भावना पायी गयी । शिक्षक की उम्र एव लिग उनके शिक्षण के प्रभाव से निकट सम्बध या अविवाहित होना उनके शिक्षण के प्रभाव पर कोई विशेष सबध नहीं रखती थी ।

पासी एव शाह (1972) ने एक शोध अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष निकाला कि अधिकाश आनुषगिक अध्ययनो से जो भारत और विदेश मे किए गये, यह निष्कर्ष निकलता है समय की बचत के लिए परपरागत शिक्षण उपागम से सूक्ष्म अध्यापन विधि कहीं ज्यादा बेहतर है ।

शर्मा, यादवेन्द्रकुमार तथा नरेश कुमार (1993) ने शिक्षण कौशल के सह-सबधो के अध्ययन से यह पाया कि शिक्षको के लिए वे कौशल अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण है जिनसे अध्यापन मे छात्रो की अधिकाधिक भागीदारी अपेक्षित की जाए । इससे शिक्षण प्रक्रिया तथा अधिगम प्रक्रिया अधिक गतिशील एव सहायक होती है । इस प्रकार छात्रो की शिक्षण मे अधिक भागीदारी दृश्य-श्रव्य सामग्री का उपयोग तथा प्रश्नोत्तर प्रणाली, शिक्षण कौशल के विकास मे महत्वपूर्ण सिद्व हुई है ।

मुथे डी एन (1980) ने बुद्वि और प्रभावपूर्ण शिक्षको के मध्य अध्ययन किया । अपने अध्ययन मे 300 जोधपुर के माध्यमिक स्कूलो के शिक्षको को शामिल किया जिनमे से 120 महिला व 118 पुरूष शिक्षक थे । अध्ययन के निम्नलिखित परिणाम रहे ।

1. प्रभावकारी शिक्षको के बुद्वि परीक्षण मे अक अप्रभावकारी शिक्षको से उच्चम सार्थक थे ।

2. व्यवसाय सतुष्टि मे प्रभावकारी शिक्षको के अक अप्रभावकारी शिक्षको की तुलना मे सार्थक एव उच्च थे ।